इकाई 17 सौन्दर्यशास्त्र के प्रमुख विचारक (भाग–2): कुन्तक, महिमभट्ट, क्षेमेन्द्र, विश्वनाथ और जगन्नाथ

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य

17.1 प्रस्तावना

17.2 आचार्य कुन्तक

17.3 आचार्य महिमभट्ट

17.4 आचार्य क्षेमेन्द्र

17.5 आचार्य विश्वनाथ

17.6 आचार्य जगन्नाथ

17.7 सारांश

17.8 शब्दावली

17.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

17.10 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

17.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- सौन्दर्यशास्त्रीय आचार्य कुन्तक, महिमभट्ट, क्षेमेन्द्र, विश्वनाथ एवं जगन्नाथ के व्यक्तित्व, कालक्रम एवं कृतित्व तथा उसमें वर्णित विषय वस्तु से परिचित हो पायेंगे।
- सौन्दर्यशास्त्रीय विचारकों के सन्दर्भ में प्रयुक्त तकनीकि शब्दावली को जान पायेंगे।

17.1 प्रस्तावना

सौन्दर्यशास्त्र का क्षेत्र बहुत अधिक व्यापक तथा विशाल है। साहित्य शास्त्र तो केवल शब्दों के माध्यम द्वारा ही निर्मित कला का ही द्योतन करता है, परन्तु सौन्दर्यशास्त्र ललित कलाओं जैसे भास्कर्य, चित्र तथा संगीत आविद्ध में निर्दिष्ट चारुत्व को भी अपने क्षेत्र के अंतर्गत करता है। इसलिए प्रस्तुत इकाई में सौन्दर्य शास्त्र के प्रमुख विचारक भाग–2 में आचार्य कुन्तक, महिमभट्ट, क्षेमेन्द्र, विश्वनाथ एवं पंण्डितराज जगन्नाथ के व्यक्तित्व, कालक्रम एवं कृतित्व तथा उसमें वर्णित विषय–वस्तु का विवेचन किया जायेगा।

17.2 आचार्य कुन्तक

आचार्य कुन्तक का आविर्भाव संस्कृत काव्यशास्त्र की एक महत्त्वपूर्ण घटना है। उन्होंने

अलंकारवादी आचार्यों द्वारा विवेचित 'वक्रोक्ति अलंकार' को अत्यधिक विस्तृत रूप प्रदान करते हुए सुप्रतिष्ठित ध्वनि–सिद्धान्त के विरोध में **'वक्रोक्ति सम्प्रदाय'** को जन्म दिया। कुन्तक ने काव्य के प्रायः सभी उपकरणों को वक्रोक्ति के व्यापक परिवेश में अन्तर्निहित कर उसे काव्य की आत्मा घोषित किया। उनकी दृष्टि में प्रसिद्ध कथन शैली से भिन्न चारुतर, विचित्र एवं असाधारण वर्णन शैली ही वक्रोक्ति है।

वक्रोक्ति जीवितम्–कुन्तक का एकमात्र ग्रन्थ **'वक्रोक्ति जीवितम्'** है, जो अधूरा ही प्राप्त हुआ है। इस ग्रन्थ में चार उन्मेष है।

- प्रथम उन्मेष में मंगलाचरण के पश्चात काव्य–प्रयोजन, काव्य और साहित्य का लक्षण, वक्रोक्ति–स्वरूप एवं भेद, वैचित्र्यादि विषयों का विवेचन है।
- द्वितीय उन्मेष में वक्रोक्ति के प्रथम तीन भेदों–वर्णविन्यास वक्रता, पद पूर्वार्द्धवक्रता और प्रत्यय वक्रता का वर्णन किया गया है।
- तृतीय उन्मेष में वाक्य–वक्रता की विवेचना है। इसके अर्न्तगत ही वस्तु वक्रता तथा अलंकारों का विवेचन हुआ है। कुन्तक ने अर्थालंकारों का वर्णन किया गया है।
- चतुर्थ उन्मेष में प्रकरण वक्रता और प्रबन्ध–वक्रता का विवेचन किया गया, जिसमें ध्वनि आदि के उदाहरण दिये गये हैं।

वक्रोक्ति सम्प्रदाय का प्रवर्तक आचार्य कुन्तक को माना जाता है। उनका सम्प्रदाय भी ऐतिहासिक तथा तार्किक दृष्टि से अलंकारसम्प्रदाय ही है। वे वक्रोक्ति को काव्य का प्राण मानते हैं अथवा काव्य की आत्मा वक्रोक्ति है। उन्होंने ध्वनि या व्यंग्य की मान्यता का विरोध किया और वक्रोक्ति में ही इसका समावेश किया। कुन्तक ने स्वप्रणीत षड्विध वक्रता में वामन–सम्मत गुणसमूह को तथा ध्वनिकार सम्मत व्यंग्यत्रयी को सम्मिलित कर लिया है। किन्तु उनकी यह वक्रोक्ति अलंकार्य नहीं अलंकार है और अलंकार्य रसादि नहीं, अपितु शब्दार्थ है। इस प्रकार भामह प्रणीत अलंकार, वामन कृत गुण तथा कुन्तक की वक्रोक्ति सभी अलंकार हैं।

17.3 आचार्य महिमभट्ट

आचार्य महिमभट्ट तथा तत्प्रणीत **'व्यक्तिविवेक'** का साहित्य शास्त्र में प्रतिष्ठित स्थान है। इनका समय एकादश शताब्दी के लगभग माना जाता है। महिमभट्ट राजानक उपाधि से विभूषित हुए थे इसलिए उनको कश्मीर निवासी माना जाता है। इनके पिता का नाम श्री धैर्य ओर गुरु का नाम श्यामल था।

व्यक्तिविवेक–'व्यक्तिविवेक' उनका प्रसिद्ध ग्रन्थ है जो तीन विमर्शों में विभाजित है।

- प्रथम विमर्श में ध्वनि–लक्षण को उद्धृत करके उसका अनुमान में अन्तर्भाव किया गया।
- द्वितीय विमर्श में अनौचित्य का विवेचन है।
- तृतीय विमर्श में ध्वन्यालोक के 40 दृष्टान्तों को अनुमान में अन्तर्निहित माना।

व्यक्तिविवेककार का मुख्य उद्देश्य ध्वनि का अनुमान मे अन्तर्भाव करना है। उनके मतानुसार दो प्रकार का वाच्य तथा अनुमेय अर्थ है। अनुमेय अर्थ तीन प्रकार के वस्तु, अलंकार और रस है। वस्तु और अलंकार वाच्य भी हो सकते हैं, किन्तु रस अनुमेय ही

है। इस प्रकार उन्होनें ध्वनि का अनुमान में ही अन्तर्भाव कर दिया है। काव्य–प्रकाशकार ने दोष विवेचन में 'व्यक्ति–विवेक' का अनुसरण किया है। किन्तु उन्होंने इसका स्पष्टतः उल्लेख नहीं किया। इस प्रकार महिमभट्ट ने 'व्यक्तिविवेक' ग्रन्थ के द्वारा साहित्य कोष की वृद्धि में महान् सहयोग प्रदान किया।

17.4 आचार्य क्षेमेन्द्र

औचित्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक तथा औचित्य विचार चर्चा के प्रणेता आचार्य क्षेमेन्द्र का काव्य जगत् में उत्कृष्ट स्थान है। उनका समय प्रायः निश्चित सा ही है क्योंकि उन्होंने अपने ग्रन्थ **'औचित्य–विचार–चर्चा'** तथा **'कवि कण्ठाभरण है।** क्षेमेन्द्र का समय 990–1066 ई॰ के मध्य मानना उचित प्रतीत होता है। क्षेमेन्द्र ने अनेक ग्रन्थों **भारत–मंजरी, बृहत–कथा–मंजरी, सुवृत तिलक** की रचना की थी। किन्तु **औचित्य विचार चर्चा** और **कवि कण्ठाभरण** प्रसिद्धि प्राप्त ग्रन्थ है।

1. **औचित्यविचारचर्चा**–काव्यशास्त्र के ग्रन्थों में क्षेमेन्द्र का यह ग्रन्थ बहुत प्रसिद्ध है। इस ग्रन्थ में कुल 19 कारिकायें है तथा अन्त में 5 श्लोकों में कवि ने अपने वंश का स्वल्प सा परिचय दिया है। कारिकाओं पर क्षेमेन्द्र ने स्वयं वृत्ति भी लिखी थी और उदाहरणों द्वारा उनकी व्याख्या की थी। इनमें कुछ उदाहरण तो क्षेमेन्द्र के स्वरचित हैं, परन्तु अधिकांश उदाहरण कालिदास, भवभूति, श्रीहर्ष, बाण, व्यास, अमरुक, कुमारदास, मातृगुप्त आदि कवियों की रचनाओं से लिये गये है।

   'औचित्यविचारचर्चा' के द्वारा क्षेमेन्द्र ने औचित्य सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया था और औचित्य की व्याख्या की थी। क्षेमेन्द्र के अनुसार औचित्य ही रससिद्ध काव्य का प्राणभूत तत्त्व है। उनका कथन है कि प्रत्येक वस्तु अपने स्थान के औचित्य से शोभायमान होती है इसलिये औचित्य के बिना अलंकार और गुण भी रोचक नहीं होते। क्षेमेन्द्र ने औचित्य की निम्न प्रकार से व्याख्या की है–

   उचितं प्राहुराचार्याः सदृशं किल यस्य तत्।

   उचितस्य च यो भावस्तदौचित्यं प्रचक्षते।।

   अर्थात् जो वस्तु जिनके अनुरूप होती है, उनको हम **'उचित'** कहते हैं। उचित का भाव ही औचित्य है।

2. **कविकुलकण्ठाभरण**–क्षेमेन्द्र का यह ग्रन्थ कवि–शिक्षा विषय पर लिखा गया है। पी॰ वी॰ काणे का यह अभिमत है कि क्षेमेन्द्र द्वारा उल्लिखित 'कविकर्णिका' ग्रन्थ और 'कविकण्ठाभरण' एक ही हो सकते हैं। 'कविकर्णिका' नाम से कोई ग्रन्थ इस समय उपलब्ध नहीं है। 'कविकण्ठाभरण' में 55 कारिकायें हैं, जो 5 सन्धियों, अध्यायों में संकलित हैं। क्षेमेन्द्र ने कविता करने की 5 सन्धियाँ या सरणियाँ निम्न प्रकार से प्रतिपादित की हैं–

   तत्राकवेः कवित्वप्राप्तिः शिक्षाप्राप्तगिरः कवेः।

   चमत्कृतिश्च शिक्षाप्तौ गुणदोषोद्गतिस्ततः।।

   पश्चात् परिचयप्राप्तिरित्येते पञ्च सन्धयः।।

इस ग्रन्थ में क्षेमेन्द्र ने शिष्यों के तीन वर्ग कहे हैं और कवियों को पाँच

वर्गों–छायोपजीवी, पदकोपजीवी, पादोपजीवी, सकलोपजीवी और भुवनोपजीवी में विभक्त किया है। इसमें उन्होंने 10 प्रकार के चमत्कारों का भी वर्णन किया है।

3. **सुवृत्ततिलक**–इस ग्रन्थ में क्षेमेन्द्र ने छन्दों का सविस्तार सुन्दर विवेचन किया है। इसमें वृत्त (छन्द) के औचित्य के सम्बन्ध में विचार है। इस ग्रन्थ को जहाँ तक वृत्त के औचित्य का सम्बन्ध है।

अभिनवगुप्त के एक शिष्य क्षेमसार थे। इन्होंने शैव दर्शन पर अनेक पुस्तकें लिखी थीं। इन्होंने अभिनवगुप्त के एक ग्रन्थ 'परमार्थसार' की व्याख्या भी की थीं। नाम की समता के कारण कुछ समालोचकों ने क्षेमसार और क्षेमेन्द्र को एक ही माना है। परन्तु इस प्रकार की धारणा गलत है। इन दोनों का व्यक्तित्व भिन्न था। 'सुवृत–तिलक' में छन्दों के सविस्तार विवेचन के अतिरिक्त **'छन्दोचित्य'** के सम्बन्ध में भी उन्होंने विचार व्यक्त किये हैं। इस प्रकार एकादश शताब्दी के मध्य तक अलंकार–शास्त्र में अनेक नवीन मतों तथा नवीन मार्गो का उद्‌भव व विकास हो चुका था। यद्यपि ध्वनिकार तथा औचित्य प्रवर्तक आचार्यों ने साहित्य–शास्त्र को समन्वित मार्ग पर ले जाने का प्रयास किया तथापि उनका दृष्टिकोण भी काव्य के विशेष तत्त्व की ओर ही अधिक रहा, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि समन्वय मार्ग का उद्‌घाटन किसी विशिष्ट प्रतिभा की प्रतीक्षा कर रहा हो।

17.5 आचार्य विश्वनाथ

आचार्य विश्वनाथ साहित्यशास्त्रीय गगन के दीप्तिमान नक्षत्र है। उनका समय निश्चित ही है क्योंकि उन्होंने **'गीतगोविन्द'** तथा **'नैषधीयचरितम्'** के उद्धरण दिये है। इनकी रचनाओं से खिलजी वंश के सुल्तान अलाउद्दीन का उल्लेख मिलता है। अतः इनकी पूर्व सीमा 13वीं शताब्दी का अन्तिम भाग है। विश्वनाथ ने अनेक ग्रन्थों की रचना की थी जिनमें **'राघव–विलास'** महाकाव्य का भी उल्लेख किया गया है। अलंकारशास्त्र पर उनकी दो रचनायें उपलब्ध होती है– प्रथम, काव्यप्रकाश की टीका **'काव्यप्रकाशदर्पण'** और दूसरी मौलिक रचना **'साहित्यदर्पण'** है, जो साहित्यशास्त्र पर लिखा गया लोकप्रिय ग्रन्थ है।

साहित्यदर्पण–साहित्य दर्पण तीन भागों में विभक्त कारिका, वृत्ति, उदाहरण किया गया है। इस ग्रन्थ में दस परिच्छेद है।

- **प्रथम परिच्छेद**– इसमें काव्यस्वरूप एवं काव्यप्रयोजन का वर्णन किया गया है।
- **द्वितीय परिच्छेद**– इसमें शब्दार्थ निर्णय का वर्णन किया गया है।
- **तृतीय परिच्छेद**– इसमें रस–भावादि का वर्णन किया गया है।
- **चतुर्थ परिच्छेद**– इसमें काव्यभेद का वर्णन किया गया है।
- **पंचम परिच्छेद**– इसमें ध्वनि तथा व्यंजनावृत्ति का वर्णन किया गया है।
- **षष्ठ परिच्छेद**– इसमें नाट्य का वर्णन किया गया है।
- **सप्तम परिच्छेद**– इसमें दोष का वर्णन किया गया है।
- **अष्टम परिच्छेद**– इसमें गुण का वर्णन किया गया है।
- **नवम परिच्छेद**– इसमें वैदर्भी आदि रीतियों का वर्णन किया गया है।
- **दशम परिच्छेद**– इसमें शब्दालंकारों और अर्थालंकारों का उल्लेख किया गया है।

इस ग्रन्थ में जहाँ एक ओर श्रव्यकाव्यों का विवेचन है, वहीं दूसरी ओर दृश्य–काव्यों की विविध विशेषताओं का विवरण दिया गया है। निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि प्राचीन समालोचकों द्वारा विश्वनाथ को द्वितीय श्रेणी का शास्त्रकार स्वीकार कर लेने पर भी अपनी काव्यगत सरलता तथा व्यापकता के कारण इनका साहित्यदर्पण अत्यधिक उपयोगी व महत्त्वपूर्ण है।

कविराज विश्वनाथ के पश्चात् तथा जगन्नाथ से पूर्व अलंकारशास्त्र पर अनेक मौलिक टीका ग्रन्थ लिखे गये, जिनमें भानुदत्त की रस मंजरी, रस–तरंगिणी है। केशवमिश्र का **'अलंकारशेखर'** अप्पय–दीक्षित का 'कुवलयानन्द' इत्यादि उल्लेखनीय है। इनके अतिरिक्त **'अलंकाररहस्य'** नामक विशाल ग्रन्थ का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।

17.6 आचार्य जगन्नाथ

व्याकरण, न्याय वैशेषिक पूर्वमीमांसा तथा उत्तरमीमांसा आदि विविध विषयों के ज्ञाता पंडितराज जगन्नाथ का सम्प्रदाय विशेष में ही नहीं अपितु साहित्य शास्त्र में महत्त्वपूर्ण स्थान है। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें पण्डितराज की उपाधि शाहजहाँ ने प्रदान की थी। उनका समय 17वीं शताब्दी का मध्य–भाग है।

पंडितराज जगन्नाथ ने अनेक ग्रन्थों की रचना की थी जिनमें 'रसगंगाधर' 'चित्रमीमांसा' अलंकारशास्त्र का ग्रन्थ है। 'मनोरमाकुचमर्दिनी' व्याकरण पर लिखा गया ग्रन्थ है तथा 'सुधालहरी' , 'जगदाभरण', 'आसफ–विलास', 'प्राणाभरण', 'भामिनी विलास' तथा 'यमुनावर्णन–चम्पू' आदि काव्य ग्रन्थ है।

रसगंगाधर–'रसगंगाधर' एक विशिष्ट शैली वाला ग्रन्थ है। उन्होंने किसी वस्तु का प्रथमतः लक्षण किया और फिर उसका स्वनिर्मित दृष्टान्त देते हुए विशद व्याख्या दिया। मम्मट आदि आचार्यों ने काव्य के तीन भेद किये किन्तु जगन्नाथ का अभिमत है कि काव्य के चार भेद करने चाहिये–**'तच्चोतमोत्तमोमध्यमाध्मभेदाच्चतुर्धा। (रसगंगाधर पृष्ठ 36)** जगन्नाथ स्वयं एक प्रतिभाशाली कवि हैं। उनकी प्रतिभा न केवल स्वरचित रचनाओं से परिलक्षित होती है इसके अतिरिक्त इस ग्रन्थ में दूसरों की कविता को नहीं अपितु स्वरचित काव्यों के श्लोकों को उदाहरण रूप में प्रस्तुत कर रहा है। कस्तूरी मृग अपनी सुगन्ध का सेवन करता है, पुष्पों की नहीं–

निर्माय नूतनोदाहरणानुरूपं काव्यं मयाऽत्र निहितं न परस्य किंचित्।

किं सेव्यते सुमनसां मनसाऽपि गन्धः, कस्तूरिका जननशक्तिभृता मृगेण।।

रसगंगाधर पृष्ठ106

विषय–प्रतिपादन की दृष्टि से **'रसगंगाधर'** को दो आननों में विभक्त किया गया है।

- **प्रथम आनन** में जगन्नाथ ने सर्वप्रथम काव्य–लक्षण, काव्य–हेतु और काव्य भेदों की व्याख्या करने के उपरान्त रस–स्वरूप विवेचित किया। गुण–स्वरूप तथा संख्या का उल्लेख करते हुए प्राचीन आचार्यों द्वारा विवेचित शब्द तथा अर्थगुणों के स्वरूप को बताकर उन्होंने उनका अन्तर्भाव माधुर्य, ओज और प्रसाद इन तीन गुणों में किया। इसके अनन्तर विभिन्न भावों का निरुपण करके रसाभास, भावशान्ति, भावसन्धि और भावसबलता का उल्लेख है।

- **द्वितीय आनन** में संलक्ष्यक्रमव्यंग्य ध्वनि का विवेचन करते हुए शक्ति नियामक तत्त्वों संयोग–विप्रयोग आदि का वर्णन किया गया है। तत्पश्चात् शब्दशक्तिमूलक तथा अर्थशक्तिमूलक ध्वनियों का विस्तृत वर्णन है। अन्त में लक्षणामूलध्वनि को निरुपित करके अभिधा और लक्षणा शक्तियों पर प्रकाश डाला गया है।

  पंडितराज जगन्नाथ के पश्चात् भी समय–समय पर साहित्य–जगत् में अनेक आचार्य हुए, जिनमें आशाधर भट्ट, आचार्य विश्वेश्वर एवं नागेश भट्ट, नरसिंह आदि विशेषतः उद्धरणीय है।

बोध प्रश्न–1

क) निम्नलिखित प्रश्नों के ठीक उत्तरों पर सही ((√)) का चिन्ह लगाइयें

i) आचार्य कुन्तक के सौन्दर्यशास्त्रीय ग्रन्थ का क्या है? (वक्रोक्तिजीवितम्/नाट्यशास्त्र)

ii) वक्रोक्तिजीवितम् कितने उन्मेषों में विभक्त है? (4/8)

iii) व्यक्तिविवेक में कितने विमर्श है? (3/4)

iv) आचार्य क्षेमेन्द्र किस सम्प्रदाय की स्थापना की? (रीति/औचित्य)

v) आचार्य क्षेमेन्द्र ने किस सौन्दर्यशास्त्रीय ग्रन्थ की रचना की? (औचित्यविचारचर्चा/साहित्यदर्पण)

ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

i) क्षेमेन्द्र का द्वितीय सौन्दर्यशास्त्रीय ग्रंथ का..... नाम है? (कविकुलकण्ठाभरण/ सरस्वतीकण्ठाभरण)

ii) आचार्य विश्वनाथ ने .....ग्रन्थ की रचना की है? (साहित्यदर्पण/ध्वन्यालोक)

iii) साहित्य दर्पण में ..... कितने परिच्छेद है? (10/8)

iv) पंण्डितराज जगन्नाथ के ग्रन्थ का नाम..... है? (रसगंगाधर/काव्यप्रकाश)

बोध प्रश्न–2

क. कुन्तक के वक्रोक्तिजीवितम् के विषयवस्तु को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

ख. क्षेमेन्द्रकृत कविकुलकण्ठाभरण के विषयवस्तु को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

अभ्यास प्रश्न

1. पंडितराज जगन्नाथ के सौन्दर्यशास्त्रीय ग्रन्थ रसगंगाधर पर निबन्ध लिखिए।

17.7 सारांश

भारतीय चिन्तन परम्परा में काव्य शास्त्र अथवा काव्य और साहित्य सम्बन्धी समीक्षा विचार विश्लेषण की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। वैदिक काल से लेकर निरन्तर

कविता की समीक्षा उपलब्ध होती है। इस प्रकार अज्ञात काल से लेकर विश्वेश्वर पण्डित तक आचार्यों की सुदीर्घ परम्परा रही। काव्यशास्त्र के बीजभूत तत्वों से अंकुरित, काव्य की विचारपरम्परा अत्यन्त फली–फूलीं और विश्वेश्वर पण्डित तक आते–आते इसने अक्षय वटवृक्ष का स्वरूप धारण कर लिया, जिसकी छाया तले रसिकों को आनन्दानुभूति होती है और मन–मस्तिष्क को अद्‌भुत शान्ति मिलती है इसलिए खण्ड–4 इकाई–17 सौन्दर्य शास्त्र के प्रमुख विचारक भाग–2 में आचार्य कुन्तक, महिमभट्ट, क्षेमेन्द्र, विश्वनाथ एवं जगन्नाथ के व्यक्तित्व, कालक्रम एवं कृतित्व तथा उसमें वर्णित विषय वस्तु का विवेचन किया गया है।

17.8 शब्दावली

आनन्दानुभूति	–	आनन्द का अनुभव
अद्‌भुत	–	अनोखा
अंकुरित	–	उत्पन्न, प्रस्फुटित
सुदीर्घ	–	बहुत बड़ा
परिलक्षित	–	दृष्टिगोचर होती है
स्वनिर्मित	–	अपने आप रची गयी

17.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- अभिनवभारती के तीन अध्याय, अभिनवगुप्त, सम्पा. नगेन्द्र, हिन्दी विभाग दि.वि. दिल्ली प्र.स. 1960
- औचित्यविचारचर्चा, क्षेमेन्द्र व्याख्या. व्रजमोहन झा, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 1982
- काव्यप्रकाश मम्मट, सम्पा. एवं व्याख्या, विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि, ज्ञानमण्डल लिमिटेड वाराणसी
- काव्यादर्श, दण्डी, सम्पा. एवं व्याख्या. डा. क्षेमेन्द्रकुमार गुप्त, मेहरचन्द्र लक्ष्मणदास, दिल्ली,1973
- काव्यालंकार भामह, सम्पा. एवं व्याख्या देवेन्द्रनाथ शर्मा, बिहार राष्ट्र भाषा–परिषद् पटना, 1985
- काव्यालंकारसूत्रवृत्ति, वामन, सम्पा. एवं व्याख्या. डा. वेचन झा, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी,
- काव्यानुशासन, हेमचन्द्र, सम्पा. एवं व्याख्या डा. रामानन्द शर्मा, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 2000
- ध्वन्यालोक, आनन्दवर्धन, विश्वेश्वरकविचन्द्र सिद्धान्त शिरोमणि, ज्ञानमण्डल लि. वाराणसी, 1998
- नाट्यशास्त्र, भरतमुनि, बटुक नाथ शर्मा एवं बलदेव उपाध्याय, चौ.सं.संस्थान, वाराणसी, 1980
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् एक अध्ययन, काशीनाथ द्विवेदी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

- रसगंगाधर, पण्डितराज जगन्नाथ, सम्पा. एवं व्याख्या चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी, 2001
- ध्वन्यालोक लोचन अभिनवगुप्त, ध्वन्यालोक की टीका, निर्णय सागर प्रेस, बम्बई 1911
- वक्रोक्तिजीवितम्, कुन्तक, राधेश्याम मिश्र चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 2007
- व्यक्तिविवेक, महिमभट्ट, रेवाप्रसाद द्विवेदी, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 1987
- सरस्वतीकण्ठाभरण, भोज, कामेश्वर नाथ मिश्र, चौखम्बा ओरियन्टालिया, वाराणसी 1979
- साहित्यदर्पण, विश्वनाथ, व्याख्याकार डा. सत्यव्रत सिंह, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, 1976
- भारतीय साहित्यशास्त्र भाग 1, 2 बलदेव उपाध्याय, भा. व. उ. प्रसाद परिषद् काशी वि. सं. 2007
- भारतीय सौन्दर्यदर्शन, ब्रजमोहन चतुर्वेदी, मध्यप्रदेश संस्कृत अकादमी, मध्यप्रदेश, 1998
- संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, बलदेव उपाध्याय, अष्टम खण्ड काव्यशास्त्र, उ.प्र.सं.सं,लखनऊ,
- कालिदास ग्रन्थावली, सीताराम चतुर्वेदी, भारत प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़, 1960
- अभिज्ञान शाकुन्तलम्, कपिलदेव द्विवेदी, साहित्य संस्थान इलाहाबाद

ENGLISH REFERENCE

(1) B.M.Chatturvedi, **Some unexplored Aspects of the Rasa Theory,**vidyanidhi Prakashan, ed.1906

(2) S.K De, **History of Sanskrit Poetics.**.,Firma KLM PVT Ltd.Calcutta,1976.

(3) Raniero Gnoli, **The Aesthetic experience according to Abhinavagupta;** chowkhamba Sanskrit Series, Varanasi, 1968

(4) P.V Kane, **History of Sanskrit Poetics**,MLBD,Delhi,f.ed. 1961

(5) A.B Keith, **History of Sanskrit literature**, oxford, 1928

(6) V.Raghvan, **The Number of Rasas,** University of Madras, 1949, Adyar Library Adyar,1940

(7) V.Raghvan,**Some Concepts of Alankar Shastras**, Adyar Library, Adyar, 1942

17.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न–1

क) (i) वक्रोक्तिजीवितम् (ii) 4 (iii) 3 (iv) औचित्य (v) औचित्यविचारचर्चा

ख) (i) कविकुलकण्ठाभरण (ii) साहित्यदर्पण (iii) 10 (iv) रसगंगाधर

बोध प्रश्न–2

क) वक्रोक्ति जीवितम्– कुन्तक का एकमात्र ग्रन्थ '**वक्रोक्ति जीवितम्**' है, जो अधूरा ही प्राप्त हुआ है। इस ग्रन्थ में चार उन्मेष है।

- प्रथम उन्मेष में मंगलाचरण के पश्चात काव्य–प्रयोजन, काव्य और साहित्य का लक्षण, वक्रोक्ति–स्वरूप एवं भेद, वैचित्र्यादि विषयों का विवेचन है।
- द्वितीय उन्मेष में वक्रोक्ति के प्रथम तीन भेदों–वर्णविन्यास वक्रता, पद पूर्वार्द्धवक्रता और प्रत्यय वक्रता का वर्णन किया गया है।
- तृतीय उन्मेष में वाक्य–वक्रता की विवेचना है। इसके अर्न्तगत ही वस्तु वक्रता तथा अलंकारों का विवेचन हुआ है। कुन्तक ने अर्थालंकारों का वर्णन किया गया है।
- चतुर्थ उन्मेष में प्रकरण वक्रता और प्रबन्ध–वक्रता का विवेचन किया गया, जिसमें ध्वनि आदि के उदाहरण दिये गये हैं।

वक्रोक्ति सम्प्रदाय का प्रवर्तक आचार्य कुन्तक को माना जाता है। उनका सम्प्रदाय भी ऐतिहासिक तथा तार्किक दृष्टि से अलंकारसम्प्रदाय ही है। वे वक्रोक्ति को काव्य का प्राण मानते हैं अथवा काव्य की आत्मा वक्रोक्ति है। उन्होंने ध्वनि या व्यंग्य की मान्यता का विरोध किया और वक्रोक्ति में ही इसका समावेश किया। कुन्तक ने स्वप्रणीत षड्विध वक्रता में वामन–सम्मत गुणसमूह को तथा ध्वनिकार सम्मत व्यंग्यत्रयी को सम्मिलित कर लिया है। किन्तु उनकी यह वक्रोक्ति अलंकार्य नहीं अलंकार है और अलंकार्य रसादि नहीं, अपितु शब्दार्थ है। इस प्रकार भामह प्रणीत अलंकार, वामन कृत गुण तथा कुन्तक की वक्रोक्ति सभी अलंकार हैं।

ख) कविकुलकण्ठाभरण–क्षेमेन्द्र का यह ग्रन्थ कवि–शिक्षा विषय पर लिखा गया है। पी॰ वी॰ काणे का यह अभिमत है कि क्षेमेन्द्र द्वारा उल्लिखित 'कविकर्णिका' ग्रन्थ और 'कविकण्ठाभरण' एक ही हो सकते हैं। 'कविकर्णिका' नाम से कोई ग्रन्थ इस समय उपलब्ध नहीं है। 'कविकण्ठाभरण' में 55 कारिकायें हैं, जो 5 सन्धियों अध्यायों में संकलित हैं। क्षेमेन्द्र ने कविता करने की 5 सन्धियाँ या सरणियाँ निम्न प्रकार से प्रतिपादित की हैं–

तत्राकवेः कवित्वप्राप्तिः शिक्षाप्राप्तगिरः कवेः।

चमत्कृतिश्च शिक्षाप्तौ गुणदोषोद्गतिस्ततः।।

पश्चात् परिचयप्राप्तिरित्येते पञ्च सन्धयः।।

इस ग्रन्थ में क्षेमेन्द्र ने शिष्यों के तीन वर्ग कहे हैं और कवियों को पाँच वर्गों–छायोपजीवी, पदकोपजीवी, पादोपजीवी, सकलोपजीवी और भुवनोपजीवी में विभक्त किया है। इसमें उन्होंने 10 प्रकार के चमत्कारों का भी वर्णन किया है।

अभ्यास प्रश्न

इस प्रश्न का उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।